स्वर्ण जयंती चौक पर चक्कर लगाता घरेलू हिंसा की मुखालफत में निकला जुलूस। -जागरण

घरेलू हिंसा : जुलूस निकाल महिलाओं ने दिखायी ताकत

◆ बढ़ौली चौराहे पर रिंग बनाने से आंधे घंटे थम गई सोनांचल की रफ्तार

सोनभद्र : 'आइये समाज को मिलकर हिंसा मुक्त बनाएं, महिला हिंसा को जड़ से मिटाएं' आह्वान व अपील के साथ आदिवासी गरीब महिलाएं व पुरूष बुधवार को सड़क पर उतरी। सावित्री बाई फूले परिनिर्वाण दिवस के मौके पर निकले लंबे काफिले में जगह-जगह तीर-धनुष से लैस लाल पहनावे में महिलाएं थी। नगर के चक्रमण के बाद जुलूस हाइडिल मैदान मे सभा के रूप में तब्दील हो गया।

कैमूर क्षेत्र महिला मजदूर किसान संघर्ष समिति, जागोरी संगठन, मानवाधिकार कानूनी सलाह केंद्र व राष्ट्रीय वन-जन श्रमजीवी मंच के बैनर तले आदिवासी महिलाओं ने जुलूस निकाला और जमकर नारेबाजी की। जुलूस में सभी शामिल महिलाएं लाल रंग के परिधान में थी। जुलूस के मध्य एक रथ भी चल रहा था। जिस पर सिर में लाल रंग के कपड़े की पट्टी बांधी महिलाएं तीर-धनुष से लैस थी। करीब एक हजार आदिवासी महिलाओं ल पुरूष वाले इस जुलूस को देखने के लिए लोगों की भीड़ लग गई। हाइडिल मैदान से निकला जुलूस करीब डेढ़ बजे बढ़ौली चौराहे पहुंचा। चौराहे के बीचों बीच बने गोलंबर का जुलूस में शामिल लोग कई चक्कर लगाए।

इसकी वजह से वाराणसी-शक्तिनगर राजमार्ग की करीब आधे घंटे के लिए रफ्तनी जाम रही। लंबे जुलूस की कमान रोमा, शांती भट्टाचार्य, सीमा श्रीवास्तव, खदीजा, सोकालो देवी व लालती देवी संभाली हुई थीं। जुलूस के माध्यम से लोगों को घरेलू हिंसा व महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न के खिलाफ लोगों को जागरूक करना था।

महिला हिंसा के खिलाफ निकाली गयी रैली

लम्बे जुलूस से आवागमन हुआ प्रभावित, बढौली चौराहे पर रहा आधा घंटा तक जाम, जो जमीन सरकारी है वो जमीन हमारी है, का दिया नारा

निज संवाददाता

सोनभद्र

राष्ट्रीय महिला दिवस और सावित्रीबाई फुले के परिनिर्वाण दिवस के मौके पर बुधवार को विभिन्न संगठनों द्वारा महिला हिंसा के खिलाफ नगर के हाइडिल मैदान से विशाल रैली निकाली गयी और बढ़ौली चौराहे पर मानव श्रृंखला तैयार कर प्रदर्शन किया गया। इस दौरान महिलाओं ने अपने ऊपर ढाये जाने वाले जुल्म के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस दौरान 'जो जमीन सरकारी है वो जमीन हमारी है' का भी नारा लगाया गया। तीर-धनुष से लैस महिलाओं ने भी इस रैली में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

वन जन श्रमजीवी मंच की रोमा, शांता भट्टाचार्या, जागोरी संगठन दिल्ली की खतीजा व सीमा श्रीवास्तव के नेतृत्व में बुधवार को एक विशाल रैली निकाली गयी। राष्ट्रीय महिला दिवस और सावित्रीबाई फुले के परिनिर्वाण दिवस पर रैली नगर के हाईडिल मैदान से निकली जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गयी। विशाल जुलूस नगर के विभिन्न मार्गों से होकर गुजरा। इस दौरान नगर के मध्य जुलूस से रास्ता लगभग अवरुद्ध हो गया था और वाहनों का संचालन रोक दिया गया था। बढौली चौराहे पर मानव श्रृंखला बनाकर प्रदर्शन भी किया गया। इस दौरान करीब आधे घंटे तक वाराणसी-शक्तिनगर मार्ग पर वाहनों का संचालन ठप रहा। जुलूस कचहरी रोड से होते हुए पुनः हाईडिल मैदान में पहुंचकर सभा के रूप में तब्दील हो गया। इस दौरान हुई सभा को संबोधित करते हुए रोमा ने कहा कि महिलाओं पर लगातार हिंसा हो रही है। कोई महिला दहेज के रूप में हिंसा का शिकार हो रही है तो कोई घरेलू हिंसा की। पिछले तीस सालों में महिला आंदोलन की अगुवाई में दहेज व घरेलू हिंसा के मुद्दे पर बहुत से अभियान चलाये गये, कानून में संशोधन हुए इसके बावजूद महिलाओं के उत्पीड़न की गंभीर समस्या समाप्त नहीं हो रही है। उन्होंने महिलाओं को आरक्षण दिये जाने का स्वागत किया और कहा कि सिर्फ राजनीतिक आरक्षण देने से महिलाओं का भला नहीं होने वाला, महिलाओं पर हो रही हिंसा के खिलाफ भी सरकार को ठोस उपाय करने होंगे तभी ऐसी समस्या से निजात मिल सकती है। जागोरी संगठन दिल्ली की खतीजा ने कहा कि लड़का-लड़की एक समान का नारा समाज के लोगों द्वारा ही दिया गया है किन्तु इसी समाज के लोग दोनो में भेदभाव बरतते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो गर्भ में ही भ्रूण हत्या क्यों करायी जाती है। इसके खिलाफ महिलाओं को जागरूक होने की जरूरत है। उनका कहना था कि आज के दौर में बालिका भ्रूण हत्या की सबसे बड़ी वजह दहेज मानी जा रही है। अध्यक्षता कर रही सीमा श्रीवास्तव ने महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के मामलों को गंभीरता से उठाया और मांग की कि सरकार इस दिशा में ठोस पहल करे ताकि महिलाओं को उनका अधिकार दिया जा सके।

राबट्र्सगंज में राष्ट्रीय महिला दिवस पर जुलूस निकालती महिलाएं • हिन्दुस्तान

सभा का संचालन शांता भट्टाचार्या ने किया। इस मौके पर अशोक तिवारी, बालकेश्वर, शकुंती देवी, सुकालो देवी, गनपत्ती देवी, राजकुमारी, तुलसी, सुशीला, चन्द्रावती आदि ने भी सभा को संबोधित किया।

कार्यक्रम के दौरान लखीमपुर खीरी की लालमती देवी और जन्नो देवी को उनके संघर्ष के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एक ही रंग की ड्रेस पहनकर इकट्ठा लोग आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे।

सावित्री बाई फुले की याद में

विजय विनीत

सोनभद्र फरवरी ।सावित्री बाई फुले के परिनिर्वाण दिवस पर बुधवार को विभिन्न जन संगठनों की हजारों महिलाओं ने जिला मुख्यालय पर ऐतिहासिक जुलूस निकाला। तमाम महिलाएं हाथों में तीर-धनुष लेकर महिला आरक्षण बिल पास होने पर खुशी का हजहार कर रही थीं वहीं अपने हक-हकुक के लिए तमाम नारे भी लगा रही थी।हाईडिल कालोनी मैदान में जुलूस सभा के रूप मंें तब्दील हो गया। सभा में सावित्री बाई फुले के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए महिला वक्ताओं ने महिलाओं को अपने हक व अधिकार के लिए जागरूक रहने का आहवान किया । जिला मुख्यालय पर मंगलवार की शाम से ही दूर दराज के क्षेत्रों से महिलाएं इकठ्ठा होना शुरू हो गयी थी। बुधवार दोपहर हाईडिल के मैदान में लाल साड़ी पहनें व हाथों में तीर-धनुष लिये जब महिलाओं की लम्बी कतार लगी तो तमाम लोग महिलाओं की पहली बार इतनी बड़ी संख्या देख अवाक थे। इनमें तमाम महिला आदिवासी क्षेत्रों की थी।उनके साथ सैकड़ांेें की संख्या में पुरूष भी आये थे जो उनके साथ भागीदारी कर रहे थे। हाथं में सावित्री बाई फुले का चित्र लेकर एक बालक चल रहा था। उसके पीछे महिलाओं का हुजुम। सावित्री बाई फुले अमर रहे, हिंसा मुक्त समाज चाहिए, दहेज प्रथा बन्द करें, हमें दुनिया से प्यार है, हिंसा से इनकार है, घर में हिंसा बन्द करों, थाने में हिंसा बन्द करें, कचहरी में हिंसा बन्द करें समेत तमाम नारे लगाते हुए महिलाओं का हुजुम नगर का भ्रमण किया।जिस मार्ग से भी महिलाओं का जुलूस गुजरा लोग आॅखें फाड़ देखते रहें। कैमूर बाद पुनः हाईडिल मैदान में पहुंचा।इसके बाद वहां एक सभा का आयोजन किया गया। कैमूर क्षेत्र महिला मजदूर किसान संघर्ष समिति, जागोरी संगठन नई दिल्ली, मानव कानूनी सलाह केंद्र,राष्ट्रीय वन जन श्रमजीवी मंच के बैनर तले महिलाओं का जुलूस हाईडिल मैदान पहुंचकर सभा के रूप में तब्दील हो गया। सभा के दौरान वक्ताओं ने महिलाओं पर हो रही हिंसा पर चिन्ता जताई। आये दिन दुराचार,दहेज हत्या,पारिवारिक हिंसा समेत अन्य तरह से महिलाओं के हो रहे उत्पीड़न पर रोक लगाने के लिए स्वयं महिलाओं को जागरूक होने की बात कहीं गयी। जागोरी संगठन नई दिल्ली की संयोजक सीमा व खदीजा ने कहा कि महिलाओं के साथ प्रतिदिन किसी न किसी रूप में हिंसा होती है। हिंसा करने वाला पति, भाई,पिता या कोई अन्य भी हो सकता है। जरूरत है हम अपने प्रति होने वाले अत्याचारों का विरोध प्रमुखता से करें। महिलाओ की स्थिति पूरे दुनिया में चिन्ताजनक है लेकिन भारत में जिस तरह महिलाओं पर पुरूष समाज अत्याचार करता है उससे निजात के लिए हमें साबित्री बाई फुले के मार्ग पर चलना होगा। जिस समय महिलाएं घर से बाहर नहीं निकलती थी उस दौरान उन्होंने तमाम आडम्बरांेें व रूढ़ियों को दर किनार करते हुए समाज में महिलाओं को आगे आने के लिए प्रेरित किया।राष्ट्रीय वन जन श्रमजीवी मंच की संयोजक रोमा ने कहा कि साबित्री बाई फुले भारत की पहली महिला अध्यापिका व नारी मुक्ति आन्दोलन की पहली नेता थी। उन्होंने अपने पति के सहयोग से देश में महिला शिक्षा की नींव रखीं । वह दलित परिवार में पैदा हुईं जिस दौरान पूरा समाज घोर ब्राह्मणवाद के शिकंजों में जकड़ा

हुआ था। उस दौरान उन्होेंने महिला व दलित समाज को जागरूक करने का काम किया।शांता भट्टाचार्या, अधिवक्ता अशोक तिवारी, लालती, राजकुमारी समेत तमाम वक्ताओं ने सभा को सम्बोधित किया।संसद में महिला आरक्षण बिल मंगलवार को पास होने पर इस क्षण को ऐतिहासिक बताते हुए महिलाओं ने सभा में मिठाईयां भी बांटे। लखीमपुर खिरी के सुरमा गाँव से आये आदिवासियों को सभा में सम्मानित किया गया। सुरमा गाँव दुधवा नेशनल पार्क के बीच वन्य गाँव है। वनाधिकार कानून 2006 पास होने के बाद इसे राजस्व गां्ंव घोषित करने की मांग यहां के आदिवासियों द्वारा शुरू की गयी। तमाम संघर्षो व आन्दोलनों के अब राजस्व गाँव घोषित करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। वहां के आदिवासियों द्वारा जनवादी तरीके से आन्दोलन करने को लेकर इस कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मीरजापुर, चन्दौली, सोनभद्र के अलावा लखीमपुर खीरी व झारखण्ड तथा बिहार की महिलाएं भी शामिल थी।जिले मंेें सावित्री बाई फुले के परिनिर्वाण दिवस 10 मार्च के उपलक्ष्य में मंगलवार से ही चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोेजन किया गया है।